भूमिका

साहित्य जीवन की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है जो जीवन की सर्वाधिक प्रामाणिक व्याख्या भी है। इसी कारण किसी भी कालजयी साहित्यकार का साहित्य, काल एवं क्षेत्र का अतिक्रमण करता है। क्योंकि साहित्य जीवन और जगत् को समझ लेने का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक साधन है, कदाचित् इसी लिए मेरी चेतना साहित्य के प्रति प्रारंभ से ही संवेदनशील रही है। अपने छात्र-जीवन काल में मुझे हिन्दी-साहित्य के अनेक साहित्यकारों की विभिन्न कृतियों का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें समझने का अवसर प्राप्त हुआ और हिन्दी के किसी महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित कवि और उसके काव्य का शोध स्तर पर अध्ययन करने का एक संकल्प भी मेरे मन में जगा, किन्तु उपयुक्त विषय को लेकर मन आश्वस्त नहीं हो पा रहा था। हिन्दू महाविद्यालय, सोनीपत के स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग में एम० ए० की उपाधि के लिए अपने अध्ययन-काल में श्रद्धेय सद्गुरु डॉ० रामकुमार शर्मा जी का साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व हम सब छात्र-छात्राओं को विशेष आकर्षित करता रहा। उनके सभी नए-पुराने विद्यार्थियों में यह आम धारणा प्रतिष्ठित है कि अनंत ज्ञान-भंडार और उदारमना गुरुवर जी के पास जो विद्यार्थी यदि एक छोटे से ताले की कुंजी सीखने या जानने के लिए जाता है तो वह उनसे दुनिया के छोटे से लेकर बड़े-से-बड़े सभी तालों की कुजियों का धनी और स्वामी होकर लौटता है। अपनी इसी आस्था के कारण जब मैंने श्रद्धेय गुरुवर के चरणों की शरण ली तो उन्होंने विषय के चयन से लेकर रूपरेखा तक के विषय में मेरी चेतना को इस प्रकार प्रकाशित एवं आश्वस्त किया कि मुझे तो दूरस्थ मंजिल के स्वर्ण-कलशों की झलक-सी दृष्टिगत होने की अनुभूति हुई। उन्होंने मुझ पर अति कृपा करके मेरी चेतना के अनुरूप हिन्दी-साहित्य के मूर्धन्य तथा लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीनरेश मेहता के साहित्यिक कृतित्व एवं अवदान की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया। श्रीनरेश मेहता की गद्य एवं पद्य की अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ प्रकाशित हैं, लेकिन मैंने काव्य कृतियों को ही अपने शोध-अध्ययन का आधार बनाया। उनकी विभिन्न काव्य-कृतियों के रसास्वादन स्तर पर अध्ययन करते हुए मेरी धारणा निरंतर प्रबल होती गई कि कविवर नरेश मेहता की काव्य-चेतना समकालीन परिवेश के प्रति सजग होते हुए भी उसमें प्राकृतिक सौंदर्य की भव्य छवियाँ, मानवीय जीवन की ज्वलंत चिन्ताएँ और समस्याएँ, व्यक्ति की आस्था-अनास्था, उसकी गरिमा, सौंदर्य-चेतना, संक्रमित मूल्यों, अन्तर्विरोधों और विसंगतियों के विविध रंगों से समन्वित एक मोहक चित्रपटी भी है जो हिन्दी-साहित्य में अपनी विशेष पहचान बनाते हुए साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट अवदान करती हुई जान पड़ती है।

कविवर श्रीनरेश मेहता ने एक सजग शिल्पी और अभिनव शब्दकार के रूप में अपनी विभिन्न रचनाओं में जीवन-जगत् तथा प्रकृति की नवभंगमिओं को चित्रित किया है। भारतीय संस्कृति के विविध आयामों, पुराकथाओं के संदर्भों की मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं के संग भाव और शिल्प की दृष्टि से उनका अत्यंत समर्थ साहित्यिक प्रदेय मानव जाति के लिए एक अत्यंत पुष्ट रसायन-सा जान पड़ता है। भारतीय साहित्य के लिए सर्वोच्च 'भारतीय ज्ञानपीठ-पुरस्कार' से सन् 1992 में कविवर नरेश मेहता को विभूषित करना जहाँ एक ओर कवि के साहित्यिक अवदान को रेखांकित करता है तो दूसरी ओर उपरोक्त धारणाओं को भी पुष्ट करता है। निश्चय ही ऐसे महान् साहित्यकार की कृतियों के शोध-स्तर पर अध्ययन में प्रवृत्त होना मेरे लिए स्वाभाविक था। इस दृष्टि से उनके साहित्य का अध्ययन करते समय मेरे मन में यह संकल्प दृढ़ हुआ कि श्रीनरेश मेहता की काव्य कृतियों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन शोध-अध्ययन की दृष्टि से एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण, उपयोगी तथा मौलिक अनुष्ठान सिद्ध होगा। परिणामतः मैंने अपनी पी-एच० डी० उपाधि के लिए शोध-प्रबंध के विषय के रूप में 'श्रीनरेश मेहता के काव्य का शैली-अध्ययन' शीर्षक विषय का चयन किया।

साहित्य की समीक्षा के लिए प्रचलित अनेक समीक्षा पद्धतियों में शैली-वैज्ञानिक समीक्षा पद्धति एक वस्तुनिष्ठ एवं तटस्थ समीक्षा पद्धति के रूप में काव्य कृतियों का मूल्यांकन करने के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध हुई है जिससे किसी भी कवि के द्वारा गृहीत चयन-संयोजन, विचलन-विपथन, समानान्तरता, बिम्ब, प्रतीक एवं छन्द आदि शैली-वैज्ञानिक उपकरणों का ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, प्रोक्ति एवं अर्थ आदि भाषिक स्तरों पर किए गए प्रयोगों के अध्ययन-विश्लेषण के माध्यम से तटस्थ एवं वैज्ञानिक निष्कर्षों के द्वारा कृति का समग्र एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन किया जाता है। शोध-स्तर पर श्रीनरेश मेहता के काव्य का शैली-वैज्ञानिक समीक्षा पद्धति से वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन नहीं हुआ है, इसलिए श्रीनरेश मेहता के काव्य का शैली-वैज्ञानिक अध्ययन शीर्षक विषय अत्यंत मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण है। शोध-विषय की रूपरेखा में मेरे सिद्धहस्त शोध-निर्देशक द्वारा शैली-वैज्ञानिक समीक्षा पद्धति के सभी उपकरणों के समायोजन से शोध-विषय अत्यंत नवीन, मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण बन गया है।

कविवर श्रीनरेश मेहता के काव्य पर पूर्व सामग्री के रूप में डॉ० रामकमल राय कृत 'आधुनिकता से आगे : श्रीनरेश मेहता', प्रभाकर श्रोत्रिय कृत 'हिन्दी साहित्य के निर्माता : श्रीनरेश मेहता', प्रमोद त्रिवेदी कृत 'नरेश मेहता : एक एकांत शिखर' आदि कुछ आलोचनात्मक ग्रंथों में उनकी कुछ काव्य कृतियों का ही मूल्यांकन हुआ है। शोध-स्तर पर उनकी सभी काव्य कृतियों का समवेत् और समग्र रूप में तटस्थ एवं वस्तुनिष्ठ समीक्षा पद्धति के द्वारा मूल्यांकन करने का यह मेरा प्रथम प्रयास है।

विश्वविद्यालय की शोध-समिति में जब मेरे विषय और उसकी रूपरेखा पर विचार हुआ तो संबंधित विद्वज्जनों द्वारा मेरे इस विषय और रूपरेखा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की जिससे एक उत्कृष्ट शोध-अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए मेरे अंदर एक नवीन स्फूर्ति और उत्साह का संचार हुआ तथा पूरी ऊर्जा के साथ मैं अपने उपरोक्त शोध-अध्ययन में प्रवृत्त हुआ।

मेरा यह शोध-प्रबंध उपसंहार के अतिरिक्त नौ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में श्रीनरेश मेहता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसमें कवि का व्यक्तित्व, काव्य विषयक उनकी धारणाएँ, धारणाओं की मौलिकता तथा काव्य में उनका प्रतिफलन आदि दृष्टियों से विचार करते हुए कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व के अन्तःसंबंध को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। कवि का व्यक्तित्व और कृतित्व जीवन-जगत् की विसंगतियों, संघर्षों, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानव-जीवन को अपूर्व जिजीविषा एवं अदम्य साहस की ओर प्रेरित करता है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय 'शैली-वैज्ञानिक अध्ययन : सैद्धान्तिक विवेचन' में प्रायोगिक प्रविधि की वस्तुनिष्ठता को रेखांकित करते हुए शैली-वैज्ञानिक समीक्षा के अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रक्रिया, परिधि-प्रयोजन, इसके उपकरणों और भाषिक स्तरों का विश्लेषण-विवेचन प्रस्तुत किया गया है जिसमें इस तथ्य को रेखांकित किया है कि कृति को स्वायत्त मानते हुए उसका तटस्थ, वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन करना इस प्रविधि का उद्देश्य होता है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत श्रीनरेश मेहता के काव्य में चयन एवं संयोजन का विश्लेषण किया गया है कि ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, प्रोक्ति एवं अर्थ काव्य को किस प्रकार नई अर्थवत्ता एवं सौष्ठवता प्रदान करते हैं। रचनाकार अपनी अभिव्यंजना की बेबाक अभिव्यक्ति में भाषा में उपस्थित विविध पर्यायों में से उपुक्त पर्याय का चयन-संयोजन कथ्य के समग्र संप्रेषण हेतु करता है। इसके लिए कहीं वह ध्वनि स्तर पर, कहीं शब्द-पद एवं वाक्य स्तर पर और कहीं प्रोक्तीय एवं अर्थ स्तर पर चयन-संयोजन कर अनुभूत कथ्य को साकार करता है। इससे यह भी सहज ही समझ में आता है कि भाषा में उपस्थित अनेक विकल्पों में से कथ्य किस प्रकार अपने अनुरूप भाषिक स्तरों का चयन-संयोजन करवाते हुए सामान्य भाषा में सर्जनात्मकता के गुण को उभार कर उसे प्रांजल एवं विशिष्ट बना देता है।

शोध-प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में श्रीनरेश मेहता के काव्य में विचलन एवं विपथन का विवेचन है। कवि का मूल प्रयोजन अपनी अनुभूति की समग्र-अभिव्यक्ति होता है। श्रीनरेश मेहता ने अपने कथ्य की अभिव्यक्ति में विभिन्न भाषिक स्तरों पर विचलन-विपथन करते हुए उसमें उत्पन्न रचनात्मकता को रेखांकित किया गया है। कहीं-कहीं कवि विचलन से विपथन करता है तो इसके कारणों का उल्लेख किया गया है।

शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय में नरेश मेहता के काव्य में समानान्तरता का विश्लेषण करते हुए यह रेखांकित किया गया है कि कवि का कथ्य किस भाँति ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, प्रोक्ति एवं अर्थीय आदि भाषिक स्तरों की समानान्तर आवृत्ति से काव्य कृति की गुणवत्ता में संवर्धन करता है। कवि ने अपने अनुभूत कथ्य को सहृदय की चेतना का अभिन्न अंग बनाने के लिए विभिन्न भाषिक स्तरों पर समानान्तरता को ग्रहण किया है जिससे उसके काव्य में प्रवाहात्मकता, नादात्मकता एवं संगीतात्मकता की सृष्टि हो उठती है।

षष्ठ अध्याय में श्रीनरेश मेहता के काव्य में प्रयुक्त अप्रस्तुत-योजना एवं सादृश्य-विधान का विश्लेषण किया गया है। उनके काव्य में किस भाँति मूर्त की मूर्त, मूर्त की अमूर्त, अमूर्त की मूर्त एवं अमूर्त की अमूर्त-योजना कथ्य को सशक्त बनाती है और सादृश्य-योजना में आकार, रूप, क्रिया एवं प्रभाव द्वारा कथ्य को प्रभावी बनाते हुए काव्य में मूर्तविधायिनी शक्ति का संचार करती है।

सप्तम अध्याय के अन्तर्गत श्रीनरेश मेहता के काव्य में बिम्ब-विधान का विवेचन करते हुए यह रेखांकित किया गया है कि उनके काव्य में वर्णित विषय की अभिव्यक्ति में सर्जित सांद्र बिम्बों द्वारा किस भाँति प्रभाव उत्पन्न हुआ है। विभिन्न प्रकार के दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, घ्राण, आस्वाद्य एवं संश्लिष्ट बिम्ब काव्य के संवेद्य विषय को सजीव बनाते हैं।

अष्टम अध्याय-'श्रीनरेश मेहता के काव्य में प्रतीक-योजना'-में प्रतीकों के द्वारा अर्थ की नवीन उद्‌भावनाओं की व्यापकता एवं प्रभावोत्पादकता का उल्लेख किया गया है। कवि ने पौराणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रतीकों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य मौलिक प्रतीकों का प्रयोग करते हुए भाषा में समाहार शक्ति एवं अर्थगांभीर्य का गुण भर दिया है। कवि द्वारा प्रयुक्त प्रतीक पौराणिक होते हुए भी समकालीन युगबोध से अनुस्यूत हैं।

शोध-प्रबंध का नवम अध्याय श्रीनरेश मेहता के काव्य में छन्द-विधान को स्पष्ट करता है। इसमें उनके काव्य में वर्णिक, मात्रिक एवं मुक्त छन्दों का विवेचन करते हुए जिस तथ्य को उभारा है वह यह है कि कवि की प्रवत्ति कथ्य की समग्र अभिव्यक्ति है। दो खण्डकाव्यों-'शबरी' एवं 'प्रार्थना पुरुष' को छोड़कर शेष सारा काव्य मुक्तक छन्दों की मंजूषा हैं। कहीं-कहीं मुक्तक छन्दों ने शास्त्रीय छन्दों का-सा रूप कैसे लिया है; इसका विस्तृत विवेचन भी किया गया है।

अंत में 'उपसंहार' के अन्तर्गत श्रीनरेश मेहता की काव्य-कृतियों की अनुभूति एवं विषय-वस्तु की कलात्मकता का निष्कर्ष है। कवि ने व्यक्ति-चेतना के उन्मेष और राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिष्कार हेतु काव्य-रचना की है। उन्होंने पौराणिक, औपनिषदिक संदर्भों को चुनते हुए अपने नवीन शिल्पगत प्रयोगों से

अपनी काव्य रचनाओं को नवीन अर्थवत्ता एव मौलिकता प्रदान की है। शोध-प्रबंध के परिशिष्ट के अन्तर्गत संदर्भ ग्रंथ-सूची भी दे दी गई है।

विषय के चयन से लेकर रूपरेखा के निर्माण तथा शोध-प्रबंध के अंत तक मेरा यह शोध-प्रबंध प्रतिष्ठित साहित्यिक-सांस्कृतिक विभूति, प्रेम और सौंदर्य जैसे सूक्ष्म एवं अनादि तत्त्वों के चिंतक-मनीषी, वीतरागी मेरे परम श्रद्धेय सद्गुरु डॉ० रामकुमार शर्मा जी, वरिष्ठ प्राध्यापक स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, सोनीपत के कुशल, निष्णात एवं नीर-क्षीर विवेकी मार्गदर्शन में संपन्न हुआ है। स्नेह, सौजन्य एवं विद्ववत्ता का पर्याय आपका तत्त्वदर्शी व्यक्तित्व मेरे कॉलेज छात्रकाल से ही मेरी चेतना को आकर्षित, प्रेरित एवं संपुष्ट करता रहा है। आपकी बाह्य निर्ममता से जहाँ मैं गहन अनुशासन के साथ कठिन परिश्रम में प्रवृत्त एवं संलग्न रहा, वहीं आपकी मेरे प्रति आन्तरिक करुणा की पारसमणि से मेरी शोध-दृष्टि का निर्माण हुआ है जिससे मैं 'सार-सार को गही कर थोथा देहि उड़ाय' के मूलमंत्र में प्रवृत्त होकर अग्रसर हो सका। इसके साथ ही मानवीय संस्कृति के महानतम जीवन-मूल्यों एवं उच्चतम आदर्शों को भी आपके जीवन और व्यक्तित्व के सानिध्य से आत्मसात् करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। शोध-अध्ययन की समूची अवधि के दौरान मेरी विभिन्न समस्याओं के समाधान में आपकी हर समय अपूर्व तत्परता एवं निरन्तर प्रोत्साहन तथा सद्प्रेरणा के बिना इस वृहद् शोध-अध्ययन की कल्पना भी संभव न थी। आज के व्यावसायिक युग में धन्य हैं ऐसे सद्गुरु! जिनके सानिध्य एवं चरणकमलों में बैठकर मैं क्या कोई भी शिष्य स्वयं को गौरवान्वित एवं कृतकृत्य अनुभव कर सकता है। परम स्नेहमयी, कर्त्तव्यपरायणता एवं सौजन्य की प्रतिरूप आपकी अर्द्धांगिनी परमश्रद्धेय श्रीमती विद्या शर्मा जी की सजग और सात्विक जीवन-शैली एवं जीवन-दृष्टि तथा उदारता से आपका घर सचमुच एक ऋषि आश्रम की-सी अनुभूति से मेरे मन को पुष्ट करता रहा है। आपके दोनों प्रतिभावान् और स्नेहिल सुपुत्रों-श्रीऋग्वेद एवं श्रीयोगक्षेम-के साथ समय-समय पर होती रही विभिन्न साहित्यिक-सामाजिक उपयोगी और प्रबुद्ध चर्चाओं से मेरी चिंतन-दृष्टि अत्यंत समृद्ध एवं प्रखर हुई है। वस्तुतः आप तथा आपके परिवार द्वारा मेरा जो उपकार हुआ है, उसके ऋण से मेरी चेतना कभी भी उऋण न हो सकेगी।

मेरी ममतामयी जननी श्रीमती मूर्तिदेवी जी के वात्सल्य तथा मेरे निर्माण में उनकी अनवरत तपस्या को शब्दबद्ध करना, माँ के आशीर्वाद को सीमित करना होगा। मेरे सारे स्वर्ग और सुख मेरी प्रेममयी जननी के आँचल की छाया एवं उनकी पगतली में विद्यमान हैं। अथक जीवन-साधक, अदम्य जिजीविषा के शक्तिपुंज मेरे परम आदरणीय पिताश्री-श्रीसुल्तान सिंह जी के जीवन और व्यक्तित्व से विपरीत-से-विपरीत परिस्थितियों में हताश न होकर उन्हें एक चुनौती के रूप में ग्रहण करते हुए जीवन-पथ पर अग्रसर रहने

की प्रेरणा एवं क्षमता को संस्कार रूप में मैंने आत्मसात् किया है। उनके द्वारा 'श्रीरामचरितमानस' के अत्यंत श्रद्धा और भक्तिपूर्ण निरन्तर पाठ का मैंने अपने शैशवकाल से ही साक्षी रहकर अपूर्व आस्तिकता को ग्रहण किया है। माता एवं पिता के ऋण से इस विश्व में कौन उऋण हो सका है?

मेरे परम उदार दोनों अग्रजों और उनकी दोनों सहधर्मणियाँ मेरे राम और सीता हैं। साथ ही इनके प्यारे-प्यारे बच्चों तथा मेरी प्यारी बहिन; सबने घर के मेरे हिस्से के सभी कार्यों को सहर्ष करके इस शोध-अध्ययन के लिए मेरा मार्ग प्रशस्त किया है।

प्रस्तुत शोध-अध्ययन में अनेक ग्रंथ लेखकों तथा विद्वानों, विशेषकर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के हिन्दी-विभाग के सभी आचार्यों एवं साहित्य मर्मज्ञ विद्वत् गुरुजनों के सौजन्यपूर्ण सहयोग, स्नेह और उत्साहवर्धन के लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

परम साधक आध्यात्मिक पुरुष डॉ० अगमप्रसाद माथुर पूर्व कुलपति, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा की विशेष कृपा दृष्टि मुझ पर रही है। उनका आशीर्वाद इस शोध-कार्य में निरन्तर मेरा उत्साहवर्धन करता रहा है।

इस शोध-अध्ययन की अवधि में मेरे विभिन्न सहपाठी प्रेमीबंधु एवं साहित्यिक मित्रजनों का निरन्तर सहयोग मुझे सुलभ रहा है। इसके लिए मैं उनका सदैव आभारी रहूँगा।

कविवर श्रीनरेश मेहता के काव्य का सम्यक् विश्लेषण-विवेचन एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रस्तुत करने वाला यह शोध-प्रबंध उनके साहित्यिक अवदान को समझने में एक महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विनम्र विश्वास है।

विनीत

रमेशकुमार

• • •